* यहाँ कृष्ण और उद्धव पर करारा व्यंग्य किया गया है।
* 'ते क्यों.....सताए' लोकोक्ति का सजीव प्रयोग हुआ है।
* सम्पूर्ण पद में अनुप्रास अलंकार की छटा बिखरी हुई है।

शब्दार्थ

बड़भागी – भाग्यशाली। **अपरस** – अनासक्त। **सनेहतगा** – स्नेह का धागा, बन्धन। **पुरइनि** – कमल। **रस** – जल। **दागी** – दाग लगना। **बोरयो** – डालना। **रूप-परागी** – रूपाकर्षण। **गुर** – गुड़। **पगी** – चिपक गई, आसक्त हो गई। **मांझ** – अन्दर। **बिथा** – व्यथा। **बिरहिनी** – विरह में जीने वाली। **बिरह दही** – वियोग की आग में जल रही हैं। **हुतीं** – थीं। **गुहारि** – रक्षा के लिए पुकार। **जितहिं तैं** – जहाँ से। **उततैं** – वहाँ से। **धरहिं** – धारण करके। **मरजादा** – मर्यादा। **लही** – रखी। **हारिल** – एक पक्षी विशेष जो इस डर से पंजों में लकड़ी पकड़ कर रहता है कि लकड़ी छूट जाने पर वह भी नीचे गिर जाएगा। **क्रम** – कर्म। **उर** – हृदय। **निसि** – रात। **साँचुख** – प्रत्यक्ष। **करुई** – कड़वी। **व्याधि** – रोग। **तिन्हैं** – उनको। **चकरी** – चंचल, चकई के समान हमेशा अस्थिर रहने वाली। **इक** – एक। **चतुर** – चालाक, निपुण। **नेह** – स्नेह, प्रेम। **जुवतिन** – युवतियों को, गोपियों को। **डोलत** – फिरते थे। **धाए** – दौड़ते थे। **नीति-सदाचार**, न्याय। **फेरि**– फिर से। **आपुन** – स्वयं। **जे** – जिन्होंने। **औरन** – औरों को। **जक** – रटना-धुन लगाना।

प्रश्न-अभ्यास

1. **गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?**
गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान बताने के पीछे व्यंग्य है कि उद्धव बड़ा अभागा है जो कृष्ण के प्रेम और सौंदर्य के समीप रहता हुआ भी उस आकर्षण और बंधन से मुक्त है।

2. **उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किससे की गई है?**
उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल-पुष्प और तेल की मटकी से की गई है। जिस प्रकार कमल जल से ऊपर रहता है और उसकी पत्तियाँ जल के समीप होते हुए भी जल की एक भी बूँद नहीं लगने देतीं हैं। दूसरी तरफ तेल की चिकनी मटकी को जल में डाला जाता है तो उसके ऊपर एक भी बूँद नहीं रूकती है। ठीक उसी प्रकार उद्धव व्यवहार में इतना रूखा है कि उस पर कृष्ण के रूपाकर्षण का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

3. **गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?**
गोपियों ने उद्धव को उलाहने देते हुए कहा कि उनका मन निष्ठुर है जिसमें प्रेम का कोई भाव नहीं है। वह कमल की उन पंखुड़ियों के समान है जो जल के पास रहते हुए भी जल को अपना स्पर्श नहीं देतीं हैं। वह उस चिकनी मटकी के समान है जो पानी में रहती हुई एक भी बूँद अपने ऊपर नहीं रोक सकती।

4. **उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेशों ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम कैसे किया?**
श्री कृष्ण गोपियों को छोड़कर मथुरा चले गए। कृष्ण के वियोग में गोपियाँ दुखद जीवन जी रही थीं। उन्हें यह आशा थी कि कभी न कभी तो कृष्ण से उनकी भेंट होगी। लेकिन जब कृष्ण उद्धव को योग-ज्ञान का संदेश देकर गोपियों के पास भेजते हैं तो गोपियाँ अत्यधिक व्याकुल हो जाती हैं और उनके विरह की अग्नि और प्रचंड हो जाती है। इस प्रकार उद्धव द्वारा दिये गये योग के संदेश ने गोपियों की विरह-अग्नि में घी का काम किया।

5. **'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?**
उपरोक्त कथन के माध्यम से कृष्ण द्वारा गोपियों के प्रेम की मर्यादा न रखकर उन अबलाओं को योग-ज्ञान को अपनाने की बात कही गई है। 'मरजादा न लही' के माध्यम से गोपियों के इसी प्रेम की मर्यादा न रहने की बात कही गई है।

6. **कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?**
कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को अभिव्यक्त करते हुए गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण हमारे लिये ऐसे ही हैं जैसे हारिल पक्षी के लिए लकड़ी। हारिल पक्षी जब उड़ता है या जमीन पर उतरता है तो अपने पंजे में तिनका या छोटी पतली लकड़ी अनवरत दबाये रहता है। उसी प्रकार हमने भी मन, कर्म और बचन से कृष्ण को पकड़ रखा है। जागते, सोते व सपने में यानी कि शरीर की प्रत्येक दशाओं में निरन्तर कृष्ण कृष्ण की रट लगाये रहती हैं। इस प्रकार से गोपियों ने उद्धव के द्वारा दी जाने वाली योग साधना की शिक्षा को सिरे से खारिज करते हुए कृष्ण के प्रति अधिकाधिक प्रेम को प्रकट किया।

Scanned with CamScanner

7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

गोपियों ने उद्धव को योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है जिन लोगों का मन चंचल है अर्थात् चकरी की भाँति अस्थिर है।

8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

गोपियाँ योग-साधना को जीवन में निरसता और निष्ठुरता लाने वाला मानती हैं। योग-ज्ञान का रास्ता अग्नि के समान जलाने वाला और घोर दुःख देने वाला है। योग-साधना को अपनाने की बातें उनकी विरहाग्नि को और अधिक बढ़ा देती हैं। योग-साधना की बातें उन्हें कड़वी ककड़ी के समान अग्रहनीय लगती हैं। योग-साधना उन्हें एक ऐसे रोग के समान लगता है जिसे उन्होंने पहले कभी न तो देखा, न सुना और न ही कभी भोगा है।

9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

गोपियों के अनुसार राजा का धर्म है कि वह अपनी प्रजा पर किसी प्रकार का कोई अत्याचार न करे। न ही कोई ऐसा कार्य करे जिससे प्रजा को दुःख पहुँचे। किसी भी तरह से प्रजा को सताया न जाए।

10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

गोपियाँ मानती हैं कि कृष्ण ने राजनीति-शास्त्र में पूरी दक्षता प्राप्त कर ली है इसीलिए उद्धव के माध्यम से योग-साधना का संदेश भेजा है। वे इतने चतुर हैं कि पहले तो अपने प्रेम-जाल में फँसा लिया और अब योग-शास्त्र का अध्ययन करने को कह रहे हैं। यह उनकी बुद्धि और विवेक का ही परिचय है कि उन्होंने उन अबलाओं को योग के कठिन रास्ते पर चलने का संदेश दिया है। कृष्ण भले नहीं हैं। भले लोग तो दूसरों की भलाई के लिए इधर-उधर भागते-फिरते हैं। कृष्ण दूसरों को तो अत्याचार पूर्ण कार्य करने से रोकते हैं और स्वयं अन्यायपूर्ण आचरण करते हैं। इन्हीं परिवर्तनों के कारण गोपियाँ कृष्ण से अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं।

11 गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशोषताएँ लिखिए?

'भ्रमरगीत' के माध्यम से सूरदास ने गोपियों के मन की व्यथा को साकार किया है। यहाँ जब उद्धव गोपियों को ज्ञान और योग का उपदेश देते हैं तब गोपियों की यही स्वाभाविक प्रतिक्रिया होती है कि वे श्री कृष्ण के रंग में रंगी हैं, उन्हें योग और ज्ञान नहीं चाहिए। उनके वाक् चातुर्य में हास्य और व्यंग्य का पुट है। उद्धव गोपियों को निर्गुण ब्रह्म का पाठ पढ़ाते हैं तो गोपियाँ तीखे व्यंग्यों का प्रयोग करती हैं। निर्गुण ब्रह्म की जगह श्री कृष्ण की श्रेष्ठता और महानता को सिद्ध किया है। उद्धव के ज्ञान और योग का गोपियों ने उपहास उड़ाया है। इसके दो कारण हैं– एक तो वे श्री कृष्ण के मित्र हैं और दूसरे यह कि उद्धव प्रेम की पीर से सर्वथा अनभिज्ञ हैं।

12. संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए?

संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूरदास के भ्रमरगीत की कई विशेषताएँ हैं। सर्वप्रथम तो व्यंग्य का भाव झलकता है। गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़ती हुई कहती है कि उद्धव कभी प्रेम के धागे में बंधे होते तो विरह की वेदना के विषय में जानते। दूसरे गोपियों की विवशता का भाव झलकता है। उद्धव द्वारा योग-संदेश के विषय में बताने पर गोपियों की कृष्ण से मिलन की आस भी छूट जाती है। तीसरे सूरदास ने गोपियों को कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति का चित्रण किया है। उन्होंने हारिल पक्षी की लकड़ी के समान कृष्ण के प्रति एक निष्ठ प्रेम का परिचय दिया है और उन्हीं में अपना विश्वास प्रकट किया है। सूरदास ने लोकधर्मिता को दर्शाते हुए राजधर्म को भी याद दिलाया है।

रचना और अभिव्यक्ति

13. गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

उद्धव जो गोपियों को निर्गुण ईश्वर का ज्ञान देने आए थे। किंतु गोपियों के श्री कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम के आगे उनकी एक न चली। किसी ने उनकी बातों को भली प्रकार से सुना तक नहीं। गोपियों के तर्कों ने उद्धव जी को निरुत्तर कर दिया। गोपियों ने योग-साधना को ठगी का सौदा बताया, कहा कि इसे ब्रज में कोई नहीं अपनाएगा। योग-साधना भूली के पत्तों के समान तुच्छ है जबकि कृष्ण की भक्ति मोती के समान अनमोल है। योग-साधना नीम के कड़वे

Scanned with CamScanner

पट - समाना।

प्रश्न-अभ्यास

उत्साह

1. **कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?**
कवि निराला बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है क्योंकि बादल की गरजन प्राणी मात्र में एक विशेष प्रकार का जोश, उमंग, उत्साह भर देता है।

2. **कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा गया है?**
उत्साह से अभिप्राय उमंग, जोश से है। कविता का शीर्षक 'उत्साह' एक तरफ तो बादलों को उमड़ा हुआ देखव प्रसन्न होने वाले प्राणियों की उमंग को प्रकटकर रहा है। दूसरी तरफ सामाजिक क्रान्ति या बदलाव के फलस्वर लोगों में छाए जोश के लिए व्यक्त हुआ है।

3. **कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?**
कविता में बादल पीड़ित-प्यासे लोगों की आकांक्षा पूरी करने वाला, नयी कल्पना और नये अंकुर के लिए विध्व विप्लव और क्रांति चेतना को संभव करने वाले की ओर संकेत करता है।

Scanned with CamScanner

4. शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता में किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद-सौंदर्य कहलाता है। 'उत्साह' कविता में ऐसे कौन-से शब्द हैं जिनमें नाद-सौंदर्य मौजूद हैं छाँटकर लिखें।

* घेर-घेर घोर गगन, धाराधर ओ!

* विद्युत-छवि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
  वज्र छिपा, नूतन कविता
  फिर भर दो -

रचना और अभिव्यक्ति

5. जैसे बादल उमड़-घुमड़कर बारिश करते हैं वैसे ही कवि के अंतर्मन में भी भावों के बादल उमड़-घुमड़कर कविता के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। ऐसे ही कभी किसी प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अपने उमड़ते भावों को कविता में उतारिए।

पाठेतर सक्रियता

* बादलों पर अनेक कविताएँ हैं। कुछ कविताओं का संकलन करें और उनका चित्रांकन भी कीजिए।

अट नहीं रही है

1. छायावाद की एक खास विशेषता है अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है? लिखिए।

छायावाद की एक खास विशेषता है अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है–

कहीं साँस लेते हो,
घर घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो।

2. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

फागुन के महीने में प्रकृति के सभी तत्त्वों पर एक विशेष प्रकार का सौंदर्य छा जाता है। जहाँ कहीं भी देखें वहाँ सुंदरता अनुपम रूप में सामने आती है। खेत-खलिहानों में, बाग-बगीचों में प्राकृतिक सौंदर्य अपने पूर्ण यौवन में नज़र आता है और इस सौंदर्य को निर्बाध देखते रहने को मन करता है। इसी कारण कवि की आँख फागुन की सुंदरता से हट नहीं रही है।

3. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है?

फागुन के महीने में हर तरफ सौंदर्य और उल्लास दिखाई देता है। फागुन की सुंदरता सर्वव्यापक है। पेड़-पौधे लाल-लाल कोंपलों और हरे पत्तों से लदे हुए हैं। फूलों की सुंगध से पूरा वातारण महक उठा है। प्रकृति की एक-एक जगह पर सौंदर्य भरा हुआ है।

4. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

फागुन के महीने में सर्वत्र मादकता छायी रहती है। हर जगह सुंदरता और उल्लास के दर्शन होते हैं। पेड़-पौधे पत्तों और फूलों से लदे होते हैं। सुंगधित हवा का चारों और संचार होता है। बसंत ऋतु अपने पूर्ण यौवन पर होती है। ये सभी बातें अन्य ऋतुओं से भिन्न हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न-अभ्यास

I यह दंतुरित मुसकान

1. बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

बच्चे की दंतुरित मुसकान पर कवि मोहित हो जाता है। उसकी निर्मल मुसकान देखकर कवि को लगा कि तालाब में खिलने वाले कमल उसके झोपड़े में खिल रहे हैं। इस सुंदरता की व्याप्ति ऐसी है कि पत्थर हृदय भी पिघल जाए।

2. बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

बच्चे की मुसकान अबोध होती है। वह इन बातों से अनभिज्ञ होता है कि कैसी बातों पर मुसकराना चाहिए। कब और किस तरह अपनी मुसकान बिखेरनी चाहिए। वह तो अपनी दंतुरित मुसकान से दूसरों के मन में अपने प्रति आकर्षण का भाव उत्पन्न कर लेता है।

बड़ा व्यक्ति परिपक्व होता है। वह समय और परिस्थितियों के अनुसार मुसकराता है या अपनी मुसकराहट पर नियंत्रण कर लेता है। फिर उसके दाँत भी बच्चे की अपेक्षा काफी बढ़ चुके होते हैं।

3. कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को किन-किन बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है?

कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिम्बों के माध्यम से प्रकट किया है–

* कमल का तालाब छोड़कर झोपड़ी में खिलना।
* बांस या बबूल से शेफालिका के फूलों का झरना।
* अपलक पहचानने के लिए देखते रहना।
* तिरछी नज़रों से देखना और आँखें मिलने पर मुस्कराना।

4. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।

यहाँ कवि का कहना है कि गाँवों में धूल-मिट्टी से सने अंग-प्रत्यंग वाले बच्चे अपने कच्चे घरों में खेलते हुए इतने आकर्षक और मनोहर लगते हैं जैसे कमल के फूल तालाब की अपेक्षा वहीं पर खिल गए हो।

(ख) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल
बांस था कि बबूल?.

कवि ने यहाँ कहना चाहा है कि बच्चों की दंतुरित मुसकान नैसर्गिक होती है। जब यह हृदय को छू जाती है तो भावहीन और संवेदनाशून्य व्यक्ति में सुख और आनंद की लहर दौड़ जाती है।

Scanned with CamScanner

6. बच्चे से कवि की मुलाकात का जो शब्द-चित्र उपस्थित हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

कवि ने जब बच्चे की दंतुरित मुसकान देखी तो उसे लगा कि उसके प्राणहीन शरीर में एक चेतना दौड़ गई है। धूल से सने बच्चे कमल के फूल के समान आकर्षक लगे और उस बच्चे का संसर्ग पाकर संवेदनशून्य हृदय भावुक हो उठा। शरीर रोमांचित हो उठा और हृदय को सुख एवं आनंद की अनुभूति होने लगी। कवि का बच्चे के साथ आत्मीय संबंध स्थापित हो गया। वह बच्चे को अपनी तरफ अपलक देखता पाकर, इस भाव से कि वह थक गया होगा, अपना चेहरा दूसरी तरफ घुमा लेना चाहता है। बच्चा तिरछी नज़रों से उसे देखता है और आँखें मिलने पर मुसकरा देता है।

पाठेतर सक्रियता

- आप जब भी किसी बच्चे से पहली बार मिलें तो उसके हाव-भाव, व्यवहार आदि को सूक्ष्मता से देखिए और उस अनुभव को कविता या अनुच्छेद के रूप में लिखिए।
- एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नागर्जुन पर बनाई गई फिल्म देखिए।

II फसल

1. कवि के अनुसार फसल क्या है?

कवि नागार्जुन ने फसल को अगिनत किसानों-मजदूरों के परिश्रम के साथ-साथ पंचमहाभूतों के योगदान का परिणाम बताया है।

2. कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्वों की बात कही गई है। वे आवश्यक तत्व कौन-कौन से हैं?

फसल उपजाने के लिए पृथ्वी, पानी, सूर्य, हवा के साथ-साथ मानव श्रम का विशेष योगदान रहता है।

3. फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

कवि नागार्जुन ने फसल को धरती और मानव-श्रम से जोड़ा है। फसल उत्पन्न करने में पृथ्वी, सूर्य, पानी, हवा आदि का योगदान होता है, परंतु किसानों-मजदूरों के दिन-रात परिश्रम के बिना फसलें पैदा नहीं हो सकती हैं। फसलों के निर्माण में एक-दो नहीं अपितु लाखों-करोड़ किसान-मजदूर लगे रहते हैं। उनकी मेहनत के बल पर ही फसल उत्पन्न होती हैं, विकसित होती हैं। ऐसा कहकर कवि किसानों-मजदूरों के प्रति अपना लगाव व्यक्त किया है।

4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) रूपांतर है सूरज की किरणों का

सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

कवि नागार्जुन ने 'फसल' कविता में फसल की उत्पत्ति को अनेक तत्वों का समन्वित रूप बताया है। इनमें सूर्य और हवा का मुख्य स्थान है। सूर्य की किरणें ऊर्जा के रूप में फसलों में स्थानान्तरित होती हैं। हवा भी फसलों को जीवन प्रदान करती है। हवा का सिमटा हुआ रूप लहलहाती फसलों में देखने को मिलता है।

Scanned with CamScanner